

- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद = कोई वस्तु उस व्यक्ति को मिलना जो उसके महत्व को ठीक से जानता ही न हो।
- बाप भला न मैया, सबसे बड़ा रुपैया = संसार में सामान्य जन माँ-बाप बंधु की अपेक्षा धन को ही महत्व देते हैं अर्थात् उनकी दृष्टि में जीवन में सब कुछ रुपया ही है।
- बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख = किसी के आगे गिड़गिड़ाना उचित नहीं, मेहनत से काम करने पर यदि भाग्य अनुकूल हो तो बिना माँगे ही सब कुछ मिल जाता है।
- बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि ले = विगत में हुई असफलताओं को भूलकर भविष्य की योजनाओं के प्रति जागरूक या सचेष्ट रहना ही बुद्धिमानी है।
- बूँद-बूँद करके तालाब भरता है = थोड़ा-थोड़ा किसी वस्तु को जोड़ने से बहुत बड़ा संचय हो जाता है।
- बैठे से बेगार भली = बेकार बैठे रहने की अपेक्षा लोगों के लिए मुफ्त काम करना अधिक अच्छा होता है।
- बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय = जैसा कर्म वैसा फल अर्थात् बुरे कर्मों का अच्छा फल नहीं मिल सकता।
- भय बिनु होय न प्रीति = शक्ति आदि के प्रभाव या भय के बिना दूसरे की अनुकूलता या प्रसन्नता नहीं होती।
- भई गति साँप छछूँदर केरी = 1. ऐसी दुविधा जिसमें किसी बात को लेना और छोड़ना दोनों कठिन हो।  
2. असमंजस की स्थिति।
- भगवान देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है = भगवान की जब कृपा होती है, तब वह बिना प्रयत्न किए भी बहुत अधिक देता है।
- भागते भूत की लंगोटी भली = जहाँ कुछ मिलने की संभावना न हो और वहाँ जो थोड़ा सा भी प्राप्त हो जाए, उसे ही बहुत समझना चाहिए।
- भूखे भजन न होइ गोपाला = भगवान का भजन भी भूखे रहकर नहीं हो सकता। अर्थात् पहले पेट पूजा पश्चात् काम।
- भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय = मूर्ख व्यक्ति गुणी व्यक्ति के महत्व को नहीं समझ सकता।